अथवा, गाँधीजी का आदर्श राज्य केवल शब्दों में पाया जाता है वास्तव में यह कहीं नहीं है।'' इस कथन की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—गाँधीजी प्लेटो की तरह किसी अन्तिम आदर्श राजनीतिक व्यवस्था चित्र प्रस्तुत नही करते हैं क्योंकि उनकी धारणा है कि एक सत्याग्रही को दूर भविष्य की चिन्ता नहीं करनी चाहिए, बल्कि उसे केवल वर्तमान समस्याओं का ही अहिंसात्मक तरीके से हल ढूँढ़ने चाहिए। फिर भी उनके ग्रन्थों, लेखों और भाषणों के अनुशीलन से उनकी आदर्श राजनीतिक व्यवस्था का एक स्पष्ट चित्र उभर आता है। यहाँ एक बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि प्लेटो के समान गाँधी जी भी हमारे सम्मुख दो आदर्श प्रस्तुत करते हैं। उनका प्रथम आदर्श अहिंसात्मक राज्य-विहीन समाज है, किन्तु वे साथ में यह भी स्वीकार करते हैं कि ऐसा उच्च आदर्श कभी प्राप्त नहीं किया जा सकता है। अतः वे एक उप-आदर्श हमारे सामने रखते हैं जिसे वे अहिंसात्मक राज्य और कभी-कभी राम-राज्य भी कहते हैं। वस्तुतः 'राम-राज्य' शब्द कभी-कभी यह भ्रम पैदा कर देता है कि वे त्रेतायुग के राजा रामचन्द्र की जैसी राजतंत्रात्मक शासन-प्रणाली स्थापित करना चाहते हैं, किन्तु इसका यह अर्थ बिल्कुल भी नहीं है क्योंकि राम के परम भक्त और उपासक होने के नाते वे अपने आदर्श राज्य के लिए 'राम-राज्य' शब्द का प्रयोग करते हैं। वस्तुतः राम-राज्य से उनका अभिप्राय एक अहिंसात्मक राज्य से है जो हमारे लिए एक आदर्श प्रस्तुत करता है। उनके आदर्श राज्य (अहिंसात्मक राज्य) की निम्नलिखित विशेषताएँ है :

1. अहिंसात्मक समाज—गाँधीजी अपने आदर्श राज्य को अहिंसात्मक समाज के नाम से भी पुकारते हैं। गाँधीजी के इस आदर्श समाज में राज्य संस्था का अस्तित्व रहेगा और पुलिस, जेल, सेना तथा न्यायालय, आदि शासन की बाध्यकारी सत्ताएँ भी होंगी। फिर भी यह इस दृष्टि से अहिंसक समाज है कि इसमें इन सत्ताओं का प्रयोग जनता को आतंकित और उत्पीड़ित करने के लिए नहीं वरन् उसकी सेवा करने के लिए किया जाएगा। इस आदर्श समाज में कभी-कभी समाज-विरोधी तत्वों के विरुद्ध दबाव का प्रयोग करना पड़ सकता है, किन्तु इस दबाव का रूप सत्याग्रह का होगा, हिंसात्मक नहीं।

2. शासन का लोकतान्त्रिक स्वरूप—गाँधीजी के आदर्श समाज में शासन का रूप पूर्णतया लोकतान्त्रिक होगा। जनता को न केवल मत देने का अधिकार प्राप्त होगा वरन् जनता सक्रिय रूप से शासन के संचालन में भी भाग लेगी। शासन सत्ता सीमित होगी और सभी सम्भव रूपों में जनता के प्रति उदारदायी होगी।

3. विकेन्द्रीकृत सत्ता—गाँधीजी के आदर्श राज्य का एक प्रमुख लक्षण विकेन्द्रीकृत सत्ता है। गाँधीजी सम्पूर्ण भारत में प्राचीन ढंग के स्वतन्त्र और स्वावलम्बी ग्राम समाजों की स्थापना करना चाहते थे, जिसका आधार ग्राम पंचायतें होंगी। विकेन्द्रीकरण को और अधिक सफल बनाने के लिए गाँधीजी का सुझाव था कि ग्राम पंचायतों का निर्वाचन तो प्रत्यक्ष रूप से ही, लेकिन ग्राम के ऊपर जो भी प्रशासनिक इकाइयाँ हों, जैसे प्रादेशिक सरकार, राष्ट्रीय सरकार, आदि के विधान मण्डलों का चुनाव अप्रत्यक्ष प्रणाली से हो जिससे सत्ता

का समस्त केन्द्र ग्राम पंचायतें ही बनी रहें। इस प्रकार की व्यवस्था से गाँवों में स्वशासन और स्वावलम्बन की भावना उत्पन्न होगी और वे वास्तविक अर्थ में स्वतन्त्र होंगे।

4. आर्थिक क्षेत्र में विकेन्द्रीकरण—गाँधीजी के आदर्श राज्य में आर्थिक क्षेत्र में विकेन्द्रीकरण को अपनाने का सुझाव दिया गया है। विशाल तथा केन्द्रीकृत उद्योग लगभग समाप्त कर दिये जाएँगे और उनके स्थान पर कुटीर उद्योग चलाये जाएँगे। उन मशीनों का तो प्रयोग किया जा सकेगा जो व्यक्तियों के लिए सुविधाजनक होंगी, किन्तु मशीनों को मानवीय श्रम के शोषण का साधन नहीं बनाया जाएगा। हर गाँव अपनी आवश्यकता की वस्तुएँ स्वयं उत्पन्न करेगा और प्रत्येक व्यक्ति अपने उत्पादन के साधनों का स्वयं स्वामी होगा। इस प्रकार आर्थिक क्षेत्र में प्रतिस्पर्द्धा और शोषण का अंत हो जाएगा।

5. नागरिक अधिकारों पर आधारित—गाँधीजी का आदर्श समाज स्वतन्त्रता, समानता तथा अन्य नागरिक अधिकारों पर आधारित होगा। इस समाज में प्रत्येक व्यक्ति को अपने विचार व्यक्त करने और समुदायों के निर्माण की स्वतन्त्रता होगी। इस समाज के अन्तर्गत जाति, धर्म, भाषा, वर्ण और लिंग आदि भेदभाव के बिना सभी व्यक्तियों को समान सामाजिक और राजनीतिक अधिकार प्राप्त होंगे।

6. निजी सम्पत्ति का अस्तित्व—इस आदर्श राज्य में निजी सम्पत्ति की प्रथा का अस्तित्व होगा, किन्तु सम्पत्ति के स्वामी अपनी सम्पत्ति का प्रयोग निजी स्वार्थ के लिए नहीं वरन् समस्त समाज के कल्याण के लिए करेंगे। वे यह समझ कर कार्य करेंगे कि उनके पास जो सम्पत्ति है उनका वास्तविक स्वामी समाज ही है और समाज के द्वारा उन्हें इस सम्पत्ति का संरक्षक या ट्रस्टी नियुक्त किया गया है।

7. प्रत्येक व्यक्ति के लिए श्रम अनिवार्य—इस आदर्श समाज में प्रत्येक व्यक्ति के लिए अपने भरण-पोषण हेतु श्रम करना अनिवार्य होगा। कोई भी मनुष्य अपने निर्वाह के लिए दूसरों की कमाई हड़पने का प्रयत्न नहीं करेगा और बौद्धिक श्रम करने वाले व्यक्तियों के लिए भी थोड़ा-बहुत शारीरिक श्रम करना अनिवार्य होगा। सभी व्यक्तियों के द्वारा कुछ न कुछ शारीरिक श्रम किए जाने पर समाज में वास्तविक समानता स्थापित हो सकेगा।

8. वर्ण व्यवस्था—गाँधीजी का आदर्श समाज वर्ण व्यवस्था पर आधारित होगा। प्राचीन काल की भाँति समाज चार वर्गों में विभाजित होगा-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। प्रत्येक वर्ण वंश परम्परा के आधार पर अपना कार्य करेगा, किन्तु विविध वर्णों के व्यक्तियों को सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्र में समान अधिकार प्राप्त होंगे और किसी प्रकार की ऊँच-नीच की भावना नहीं होगी।

9. अस्पृश्यता का अन्त—गाँधीजी अस्पृश्यता को भारतीय समाज के लिए कलंक मानते थे और उनके आदर्श समाज में अस्पृश्यता के लिए कोई स्थान नहीं था।

10. धर्म निरपेक्ष समाज—इस समाज में किसी एक विशेष धर्म को राज्य का आश्रय प्राप्त नहीं होगा। राज्य की दृष्टि में सभी धर्म समान होंगे और सभी धर्मों के अनुयायियों को समान सुविधाएँ प्राप्त होंगी।

11. गौवध निषेध—गाँधीजी भारत जैसे राज्य में धार्मिक तथा आर्थिक दोनों ही दृष्टि से गाय की रक्षा को बहुत अधिक आवश्यक मानते थे। इसलिए उनके द्वारा अपने आदर्श समाज में गौ-हत्या का निषेध किया गया है।

12. मद्य निषेध—गाँधीजी का निश्चित विचार था कि मद्य और अन्य मादक पदार्थों का प्रयोग व्यक्तियों का चारित्रिक पतन करता है। अतः उनके आदर्श समाज में मादक पदार्थों का न तो उत्पादन होगा न उनकी बिक्री।

13. निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा—गाँधीजी के आदर्श समाज में गाँव-गाँव में बुनियादी तालीम देने के लिए स्वावलम्बी पाठशालाएँ होंगी, जिससे प्रत्येक व्यक्ति को कम-से-कम प्राथमिक शिक्षा निःशुल्क प्रदान की जाएगी।

14. पुलिस और सेना—गाँधीजी मानते थे कि सभी व्यक्ति अहिंसावादी नहीं हो सकते। समाज-विरोधी तत्वों का दमन करने के लिए पुलिस की आवश्यकता यदा-कदा पड़ सकती है, परन्तु आधुनिक पुलिस से उसका स्वरूप भिन्न होगा। आदर्श राज्य की पुलिस जनता की वास्तविक सहायक और सेवक होगी। व्यक्ति नौकरी पाने के लिए नहीं अपितु जनता की सेवा की भावना से पुलिस में भर्ती होंगे। पुलिस अपने कार्य में अहिंसा का सहारा लेगी। आदर्श राज्य में सेना नहीं होगी। चूँकि आदर्श राज्य केवल एक देश तक सीमित नहीं है, वह सम्पूर्ण विश्व के लिए एक आदर्श व्यवस्था है। ऐसी स्थिति में संसार के देश युद्ध प्रिय नहीं, शान्तिप्रिय होंगे। शान्ति के लिए यदि किसी सेना की आवश्यकता हो तो-वह होगी 'शान्ति सेना।'

गाँधीजी के आदर्श राज्य में न्याय व्यवस्था का स्वरूप ऐसा नहीं होगा जैसा कि आज है। आधुनिक न्याय प्रणाली महँगी और पेचीदा है। गाँधीजी के अनुसार न्याय ग्राम पंचायतों द्वारा होगा अथवा मध्यस्थों द्वारा।

आदर्श राज्य में डॉक्टरों की लम्बी-चौड़ी फौज की आवश्यकता नहीं होगी। कार्य करने की परिस्थितियाँ स्वस्थ होंगी। बड़े-बड़े नगर और मशीनें नहीं होंगी। रोग और गन्दगी का अभाव होगा। फिर भी यदि कुछ डॉक्टर हुए तो वे समाज-सेवी होंगे, धन-लोलुप नहीं।

गाँधीजी के आदर्श राज्य की व्यावहारिकता—गाँधीजी का अहिंसक समाज क्या इस पृथ्वी पर सम्भव है ? अथवा उनका चिन्तन प्लेटो की भाँति कल्पना लोक का ही विषय है ? गाँधीजी स्वयं मानते थे कि उनके आदर्श समाज की स्थापना पूर्ण रूप से कभी सम्भव नहीं है। उन्हीं के शब्दों में, "एक सरकार कभी भी पूर्ण रूप से अहिंसक नहीं बन सकती है, क्योंकि इसमें सभी प्रकार के व्यक्ति रहते हैं। मैं ऐसे स्वर्ण युग की कल्पना नहीं करता जब ऐसा समाज स्थापित होगा, किन्तु मैं ऐसे समाज की स्थापना में विश्वास रखता हूँ जो प्रधान रूप से अहिंसक हो और मैं इसके लिए प्रयत्न कर रहा हूँ। अगर हम ऐसे समाज के लिए प्रयत्न करते रहें तो वह किसी हद तक धीरे-धीरे बनता रहेगा और उस हद तक लोगों को उससे फायदा पहुँचेगा।"